IJAER/July- August- 2021/Volume-10/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

बलबीर सिंह कट्ट. कलात्मक व्यक्तित्व

शबनम
शोधार्थिनी
ललित कला विभाग
मालवांचल विश्वविद्यालय
इन्दौर, म0प्र0

डा0 वर्षा रानी
शोध निर्देशिका
ललित कला विभाग
मालवांचल विश्वविद्यालय
इन्दौर, म0प्र0

आधुनिक युग के एक प्रख्यात पत्थर तराशने वाले भारतीय मूर्तिकार बलबीर सिंह कट्ट को हमेशा औपनिवेशिक उदारवाद के बाद शुद्ध अर्थ के साथ स्मारकीय मूर्तियों के संस्थागत लोकाचार को समृद्ध करने का श्रेय दिया गया है। उनके करियर के दौरान तीन दशकों (1970 से 2000) से अधिक समय में, यह देखना वास्तव में आश्चर्यजनक था कि कैसे उन्होंने **'बड़े ब्लॉकों को संभालने में अपनी निरंतर रुचि'** को हमेशा बड़े शिलाखण्डों जारी रखा, जबकि उनके कई समकालीनों ने व्यावहारिक रूप से पत्थर के छोटे या पोर्टेबल टुकड़ों को करना पसंद किया। यह अध्ययन समकालीन भारतीय कला के क्षेत्र में उनके कलात्मक कार्यों और जीवन की जांच करता है। गुणात्मक शोध उपकरणों को अपना कर यह पेपर भारत में सार्वजनिक स्थान पर स्मारकीय मूर्तिकला के संदर्भ में उनके कलात्मक उत्पादन की खोज करता है।

प्रो0 बलबीर सिंह कट्ट : आधुनिक भारतीय मूर्तिकार

प्रो0 बलबीर सिंह कट्ट अपने **'प्रत्यक्ष नक्काशी मोड'** के लिए विशेष रूप से शास्त्रीय मूर्तियों के अपने स्मारकीय निकायों के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी नक्काशी तकनीक भारतीय मूर्तियों, वास्तुकला से जुड़ी हुई थी और अमूर्तवादी अनौपचारिक सिद्धांतों पर भी आधारित थी। उन्होंने पैटर्न को संरचनाओं में विभाजित किया और सतह का निर्माण किया।

वह बिना मकेट की मदद के नक्काशी करते थे और पत्थर पर प्राकृतिक–बनावट के रूप में विभिन्न प्रकार की धारियाँ बनाते थे। उनकी छेनी को प्रत्येक स्ट्रोक के दौरान अत्यधिक लयबद्ध माना गया है। वह पत्थर की प्राकृतिक बनावट और चिकनी के साथ–साथ सपाट चिकनी सतहों को भी शामिल करते थे। वह ज्यादातर अपनी पत्थर की नक्काशी की प्रक्रिया में क्रिस्टल प्लेन की तरह खेलते थे।

अपने कलात्मक अभियान के बारे में कला–आलोचक केशव मलिक ने प्रो0 बलबीर सिंह कट्ट की मूर्तियों पर लिखा है, जिसमें उनकी रचनात्मकता के कुछ प्रमुख तत्वों पर प्रकाश डाला गया है। उन्होंने कहा कि ''इस प्रकार, लय उनके महत्वपूर्ण पत्थरों का संचालन सिद्धांत है। वह भारी कर्तव्य विचारों और अवधारणाओं के अलावा संवेदना और यहां तक कि भावनाओं के लिए एक लयबद्ध प्रारूप को प्राथमिकता देते है। इसलिए प्रो0 बलबीर का काम आध्यात्मिक बिजली के

संचालन के लिए बिजली के कंडक्टर की तरह है। एक कंटेनर जहां मानस ऊर्जा संग्रहीत की जा सकती है जहां बल संग्रहीत किया जा सकता है जहां कच्ची भावनात्मक ऊर्जा का आउटलेट हो सकता है। यह सच है कि आधुनिक मूर्तिकला की कला को दर्शकों की समझ की बहुत आवश्यकता होती है। तो हालांकि एक मूर्तिकला की लय कितनी भी शक्तिशाली हो, दर्शक को इसे प्राप्त करने, नियंत्रित करने और इससे लाभ उठाने की आवश्यकता होती है।

दर्शकों की दृष्टि के व्याकरण पर अभी भी चर्चा की जानी बाकी है, हालांकि यह अरुचिकर हो सकता है। हमें केवल उस कला और स्थापत्य रूपों को याद रखना है जो अतीत से विरासत में मिले हैं, और जिनका उपयोग हम बचपन से करते आ रहे हैं। बलबीर की रचनाएँ नियम का अपवाद नहीं हो सकती हैं।

यह एक ऐसे कलाकार है जो अपने स्मारकीय काम की गुणवत्ता और प्रामाणिकता से एक अलग ही पहचान बनाते है। उनकी प्रगति में उनका प्रत्येक प्रस्तर शिल्प कार्य, उनके शांतिनिकेतन के दिनों से लेकर घाटी के काले ब्लॉकों तक, रूप की बढ़ती एकाग्रता को दर्शाता हैं। सामग्री के घनत्व और ठोसता के बावजूद काम खुद के काम को आगे बढ़ाते है। निःसंदेह प्रो0 बलबीर सिंह कट्ट इस अड़ियल सामग्री के लिए एक मैच है। उनमे वह प्रकट होता है जिसे **'धैर्य'** कहा जाता है।

यह स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण ऊर्जा, अणुओं या कोशिकाओं की अभिव्यक्ति है। मूर्तिकार की पूरी शैली किफायती, अतिरिक्त, मजबूत और पुष्ट है जैसा कि उनके व्यक्तित्व में उनके काम में है। प्रो0 बलबीर सिंह कट्ट न केवल एक महान मूर्तिकार थे बल्कि एक प्रखर कवि होने के साथ–साथ एक अच्छे वक्ता भी थे। वे एक जोशीले व्यक्तित्व और दृढ़ इच्छा शक्ति के धनी थे। वे एक जबरदस्त शिक्षक थे। उन्होंने भारत के मूर्तिकारों को संगठित और एकजुट करने के लिए जोश से **'मूर्तिकला फोरम ऑफ इंडिया'** का गठन किया। कट्ट अपने जीवन में जितना करना चाहते थे उसका आधा काम भी नहीं कर पाए क्योंकि एक दिन वह अचानक गायब हो गए और केवल धुंध की छाया रह गई।

यह एक मिथक की तरह लगता है कि एक प्रतिष्ठित है जो अंतराष्ट्रीय स्तर पर मूर्तिकार एक दिन अपने घर से निकलता है और कभी वापस नहीं आता है। उनकी अदृश्यता पर हम कह सकते हैं। घने जंगल में चमकता सूरज हमेशा के लिए चला गया। लेकिन उनकी छेनी के हर झटके की गूंज आधुनिक कला जगत में हमेशा सुनने को मिलती है।

प्रो0 बलबीर सिंह कट्ट के व्यक्तित्व की अगर बात की जाये तो वह काफी साहसी प्रवृति के थे। लेकिन उनके सामने यह कहा जाता तो वह विरोध करते। उन्हें शब्द पसंद थे परन्तु उच्च प्रवाह के नहीं भले ही उनकी कला सर्वोत्तम अर्थो में श्रेष्ठ थी। उनके लिए वह क्या सोचते हैं से ज्यादा महत्वपूर्ण यह था कि जो वह सोचते है उसे प्रभावी तरीके से निष्पादित कर दर्शकों तक कैसे पहुँचाया जाये। इसके लिए उन्होंने गर्म खदानों में बैठना भी सहर्ष स्वीकार किया। कर्मठ आदिवासी

मजदूर उनके मित्र ही नहीं, अपितु नायक भी थे। प्रो0 बलबीर सिंह कट्ट इन मेहनतकशों से एक बहुत ही आत्मीय सम्बन्ध सांझा करते थे। वह कहते थे कि अगर जरुरत का अहसास नहीं है, तो कोई जुनून नहीं है। मुझे काम करना चाहिए, चाहे कीमत जो भी हो।'

अमोघ ताजगी, एक काम से दुसरे काम तक शैली का नवीनीकरण, शान्तिनिकेतन, बडौदा और वाराणसी में अथक कला आन्दोलन व कई अन्तराष्ट्रीय कला शिविरों में भागीदारी भी उनकी कला दृष्टि में साहसिक परिवर्तन का कारण बनी। उन्होंने इस बात का सदैव ध्यान रखा कि जीवित छवि एक प्रतीक के रूप में विकसित हो। अपनी छवियों को शक्तिशाली प्रतीकों में केन्द्रित करके उन्होंने अपने दर्शको पर वास्तव में जादुई प्रभाव प्राप्त किया। निष्ठा के साथ उत्कृष्ट कल्पना का यह संलयन उनकी अभूतपूर्व कलाकृतियों में महान अपील का रहस्य है।

आज से 22 साल पहले बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कला संकाय के डीन पद पर रहते हुए प्रो0 बलवीर सिंह कट्ट गायब हो गए थे। अब तक उनका पता नहीं चल पाया है, वो भारत के प्रसिद्ध कलाकारों में गिने जाते हैं। उनकी पत्नी प्रो0 लतिका कट्ट के अनुसार जो स्वयं भी एक मूर्तिकार हैं और दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में मूर्तिकला विभाग की प्रमुख रह चुकी है , "प्रो0 बलवीर सिंह कट्ट 30 जनवरी 2000 को सुबह 11:30 बजे घर से निकलने के बाद से लापता है ।"

सन्दर्भ ग्रन्थ

- अप्पासामी, जे., भारतीय कला के 25 वर्ष स्वतंत्रता के बाद के युग में पत्थर की मूर्ति, मूर्तिकला और ग्राफिक्स, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, 1972
- अप्पासामी, जया, द क्रिटिकल विजनः सेलेक्टेड राइटिंग, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, 1985
- आर्चर, डब्ल्यूजी, इंडिया एंड मॉडर्न आर्ट, जॉर्ज एलेन एंड अनविन, लंदन, 1959 अंग्रेजी
- आर्यन, केसी, पंजाब स्टोन स्कल्पचर का 100 साल का सर्वेक्षण, (1841–1941), पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1975
- ब्राउन, रेबेका एम., आर्ट फॉर ए मॉडर्न इंडिया, 1947–1980, ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 2009 अंग्रेजी
- डालमिया, यशोधरा, चौतन्य सम्बरानी, और अन्य, स्वतंत्रता के बाद की भारतीय समकालीन कला, वदेहरा आर्ट गैलरी, नई दिल्ली, 2000